पार्टी की वरिष्ठ कार्यकर्ता और जनता की सच्ची सेविका

कामरेड सुनीता के आदर्शों को ऊंचा उठाओ!

प्यारे लोगो!

गंभीर अस्वस्थता के चलते 18 मार्च 2012 को कामरेड सुनीता की दुखद मृत्यु हुई। उनकी उम्र करीब 47 वर्ष थी। पिछले तीन दशकों से वे जनता की सेवा में लगी हुई थीं। इस लम्बी यात्रा में उन्होंने कई दिक्कतों और बाधाओं का दृढ़ता से सामना किया और आखिर तक क्रांति का लाल पताका बुलंद रखा। जब उनकी मृत्यु हुई उस समय वे पश्चिम बस्तर के गंगालूर इलाके में टेलर टीम (कपड़ा सिलाई करने वाली यूनिट) की प्रभारी के रूप में कार्यरत थीं। कामरेड सुनीता एक स्नेहिल साथी थीं। उनके चेहरे पर बच्चों जैसी मासूमियत रहती थी। साथ ही, किसी भी मुश्किल का सामना कर सकने का साहस भी उनमें साफ दिखाई देता था।

आंध्रप्रदेश के दक्षिण तेलंगाना में मेदक जिले के गांव वेलदुर्ति में उनका जन्म हुआ था। वे एक गरीब किसान परिवार की बेटी थीं। माता–पिता ने उनका नाम स्वरूपा रखा था। दो बहनों और तीन भाइयों में वह दूसरी थीं। गरीबी के चलते वह पढ़ाई नहीं कर पाई थीं। पिछड़ेपन के चलते माता–पिता ने बचपन में ही उनकी शादी एक रिश्तेदार से कराई थी। लेकिन पारिवारिक झगड़ों के कारण वह शादी जल्दी ही टूट गई।

उस समय उनके मामा उन्हें अपना घर ले गए थे। हमारी पार्टी के महान शहीदों में से एक कामरेड उडुतला श्रीनिवासुलु ही उनके मामा थे। कामरेड श्रीनिवासुलु दंपत्ति ने स्वरूपा की सगी बेटी की तरह देखभाल की। उनका परिवार पूरा पहले से क्रांतिकारी राजनीति को आत्मसात कर चुका था और स्वरूपा ने भी इस राजनीति में प्रवेश किया। पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने के बाद वे स्वरूपा से 'सुनीता' बनीं।

1983 में वे कामरेड आनंद की जीवनसंगिनी बनी थीं। आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले के नरसरावपेट गांव के कामरेड आनंद का असली नाम मुरली था। जिस समय आनंद और सुनीता की शादी हुई थी, तब आनंद हमारी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के कुरियर के रूप में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रहे थे। सुनीता ने भी उनके साथ प्रदेश की सीमाओं को पार कर आनंद के साथ भूमिगत हो गईं। पार्टी की जरूरतों के मुताबिक उन दोनों ने तमिलनाडु, कर्नाटका, ओड़िशा और महाराष्ट्र में पार्टी के लिए डेन (गुप्त मकान) का संचालन किया। जरूरत के हिसाब से कामरेड सुनीता ने कई भाषाएं सीख लीं। बड़े नेताओं और अहम कामों के लिए डेन चलाना कोई मामूली बात नहीं है। इसके लिए फौलादी अनुशासन, गुप्त कार्यपद्धति, बलिदानी भावना, साहस, सूझबूझ, सेवा की भावना, मितव्ययता आदि गुणों का होना जरूरी है। आमतौर पर शहरों और कस्बों में ही डेन चलाया जाता है, जहां पर उपभोक्तावादी संस्कृति हमें दबोच लेने को हरदम तैयार रहती है। लेकिन इन दोनों की जोड़ी ने सर्वहारा संस्कृति को बुलंद रखकर ऐसी संस्कृति का विरोध किया। डेन में अमूमन महिला साथियों पर यह सुनिश्चित करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी रहती है कि अड़ोस–पड़ोस के लोगों को हमारी गतिविधियों पर कोई शक न आए। कामरेड सुनीता ने इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। डेन की जिंदगी में आने वाली तमाम किस्म की दिक्कतों और परेशानियों का उन्होंने धैर्य के साथ सामना किया। क्रांति के हितों को सर्वोपरि मानते हुए उन्होंने बच्चे पैदा करने की इच्छा भी त्याग दी।

इस तरह करीब दस सालों तक डेन की जिम्मेदारियों का निर्वाह करने के बाद 1994 में कामरेड्स आनंद और सुनीता दण्डकारण्य आ गए ताकि जनयुद्ध के मोर्चे में प्रत्यक्ष काम किया जा सके। पार्टी ने उन्हें कुछ समय के लिए टिप्रागढ़ इलाके में रखने का फैसला किया था। उसी समय, 28 अगस्त 1994 को सिंदसूर गांव के पास पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में कामरेड आनंद शहीद हो गए।

जान से भी प्यारे अपने प्रिय साथी के इस तरह चले जाने से वे काफी आहत हुईं। तब पार्टी ने उनसे पूछा था कि वे कहां काम करना पसंद करेंगी। उनका जवाब था कि जहां उनके जीवनसाथी का खून बहा, उसी दण्डकारण्य में काम करेंगी। उनकी आकांक्षा को देखते हुए उच्च कमेटी ने उन्हें बालाघाट डिवीजन में टांडा गुरिल्ला दस्ते में भेज दिया। उस समय बालाघाट डिवीजन के पार्टी नेतृत्व में पितृसत्ता सम्बन्धी कई समस्याएं सामने आई थीं। कुछ पुरुष कामरेडों के अंदर मौजूद कट्टर पितृसत्तात्मक विचारों के चलते सुनीता समेत कुछ महिला कामरेडों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। उसी समय, यानी कामरेड आनंद की शहादत के ठीक एक साल बाद उनके मामा कामरेड उडुतला श्रीनिवासुलु का गंभीर बीमारी के चलते निधन हुआ। इस खबर ने उन्हें और भी ज्यादा कष्ट पहुंचाया। इन तमाम कारणों से उनकी तबियत बुरी तरह बिगड़ गई। उसके बाद दण्डकारण्य के जोन नेतृत्व और केन्द्रीय नेतृत्व

उनसे मिलकर पार्टी की ओर से हुई गलतियों पर खेद व्यक्त किया था। उसके बाद वे पार्टी के कामकाज में पहले की तरह सक्रिय हो गईं।

उस दौरान वे आंध्रप्रदेश में कुछ महीनों के लिए गुरिल्लों के एक कैम्प में रही थीं। उस कैम्प में पार्टी के राज्य कमेटी सदस्य कामरेड लिंगामूर्ति (कृष्ण) भी मौजूद थे। उस कैम्प में कुछ दिन बिताना कामरेड सुनीता की जिंदगी में एक महत्वपूर्ण मोड़ बताया जा सकता है। उस कैम्प में मौजूद कई कामरेडों के स्नेहपूर्वक बरताव ने उनके घावों पर मलहम का काम किया। उनके निष्कपट बरताव और सभी से घुलमिल जाने के उनके मिलनसार व्यक्तित्व ने कामरेड कृष्ण को आकर्षित किया। 1994 में अपनी जीवनसंगिनी कामरेड पद्मा को एक फर्जी मुठभेड़ में खो चुके कामरेड कृष्ण ने कामरेड सुनीता को अपनी जिंदगी में आने का न्यौता दिया। कामरेड सुनीता ने इस न्यौते को स्वीकार किया। और इन दोनों के इस फैसले को पार्टी ने स्वागत किया। इस तरह 1998 में कामरेड्स सुनीता और कृष्ण एक दूसरे की जिंदगी का हिस्सा बन गए।

उसके बाद कामरेड सुनीता नल्लामला क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गईं। वहां पर 'निर्मला' के नाम से वे लोकप्रिय हो गईं। पहले उन्होंने महानंदी गुरिल्ला दस्ते में सदस्य के रूप में काम किया। उसके बाद वहीं पर एरिया कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी लेकर काम किया। नल्लामला की कठिन भौगोलिक धरातल में उन्होंने साढ़े तीन सालों तक काम किया। वहां पर जनता, पार्टी नेतृत्व और कैडरों का विश्वास व प्यार जीत लिया।

2001 के आखिर में कामरेड सुनीता को पेट दर्द शुरू हुआ था। इलाज के लिए वे नल्लामला जंगलों से बाहर चली गईं। उसी समय उनकी जिंदगी में फिर एक बार भारी झटका लगा। 27 मार्च 2002 को कृष्णा नदी में नाव पलट जाने से कामरेड कृष्ण की दुखद मृत्यु हुई। उस समय कामरेड सुनीता किसी हमदर्द के घर पर थीं जहां उन्हें जी भर रोने का भी मौका नहीं था।

उस समय नल्लामला क्षेत्र में सरकारी दमन तीव्र हो रहा था। उनकी तबियत भी अनिश्चित रहने लगी थी। इसलिए आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी ने उन्हें वहां से स्थानांतरित किया। दो साल तक वे बाहर रहीं। अस्वस्थता के बावजूद गुरिल्ला जोन के अंदर ही रहते हुए कुछ न कुछ काम करने की इच्छा थी उनकी। तब तक दण्डकारण्य में बढ़ते जनयुद्ध की जरूरतों को पूरा करने के लिए कई सहायक विभागों का निर्माण होने लगा था। जन सैनिकों की वर्दियां सीने के लिए टेलरों (दर्जियों) की जरूरत काफी बढ़ गई। इसे ध्यान में रखकर उन्होंने सिलाई का काम सीख लिया। उस समय उनका पेट दर्द गंभीर रूप से बढ़ गया जिससे उन्हें आपरेशन करवाना पड़ा था। इसके बाद भी उन्होंने सिलाई का काम सीखना जारी रखा और फरवरी 2004 में टेलर के रूप में दण्डकारण्य में कदम रखा।

करीब आठ महीनों तक उन्होंने माड़ क्षेत्र में काम किया। वहां के दूसरे कामरेडों को प्रशिक्षित भी किया। उसके बाद उन्हें दक्षिण रीजियन स्थानांतरित किया गया। रीजनल स्तर की टेलर टीम का निर्माण किया गया। इस टीम का कामरेड सुनीता ने नेतृत्व किया। उसके बाद 2007 में उन्हें पश्चिम बस्तर डिवीजन भेजा गया। पश्चिम बस्तर के गंगालूर एरिया टेलर टीम का उन्होंने नेतृत्व किया। आखिर तक वे इसी जिम्मेदारी में रहीं। अगस्त 2011 में वे बीमार पड़ी थी। अस्पताल ले जाने पर पता चला था कि उन्हें कैंसर है जोकि दूसरे चरण में पहुंच चुका है। इलाज शुरू भी हुआ, लेकिन वे बच नहीं पाईं। इलाज के दौरान ही उन्होंने आखिरी सांस ली।

अपने साथियों से वे जितना प्यार करती थीं, उतना ही दुश्मन से नफरत करती थीं। जब वे दक्षिण रीजियन पहुंची थीं, उसी समय सलवा जुडूम शुरू हुआ था। जनता पर अकथनीय हिंसा और अत्याचार हुए थे। 2009 से आपरेशन ग्रीनहंट के हमले शुरू हुए थे। कामरेड सुनीता जहां काम करती थीं, वहां की जनता से मिलकर उसका ढाढ़स बंधाती थीं। दुश्मन के हमलों से न डरते हुए प्रतिरोध करने की बात करती थीं। दुश्मन के बलों पर जनता और पीएलजीए द्वारा की जाने वाली हर साहसिक कार्रवाई पर और हासिल हर कामयाबी पर वे अपनी खुशी प्रकट करती थीं।

कामरेड सुनीता ने पार्टी में आने के बाद ही पढ़ना–लिखना सीख लिया। लिखना मुश्किल लगने से भी वे शहीदों की यादें लिखा करती थीं। वे अपने साथियों को नियमित पत्र लिखा करती थीं। कामरेड सुनीता का क्रांतिकारी जीवन आज की पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण है। तमाम मुश्किलों और परेशानियों की परवाह न करते हुए उन्होंने आखिरी दम तक क्रांति के पथ पर अपना सफर जारी रखा। वे एक आदर्श कम्युनिस्ट थीं जिन्होंने पार्टी में अपने पद और स्तर के बारे में सोचे बगैर जनता और पार्टी की निस्वार्थ तथा भरसक सेवा की।

आइए साथियो, कामरेड सुनीता के आदर्शों को ऊंचा उठाए रखें। अपनी तीस सालों की लम्बी क्रांतिकारी जिंदगी में उनके द्वारा प्रदर्शित उच्च मूल्यों और उच्च क्रांतिकारी चेतना को आत्मसात कर लें। उनके सपनों को साकार करने के लिए मजबूती से कदम बढ़ाएं। अमर रहें कामरेड सुनीता!!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी

8 अप्रैल 2012 **दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी**